

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2012-14
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

SEVA-DHAM HOSPITAL

(YOGA, AYURVEDA, NATUROPATHY & PHYSIOTHERAPY)

Relax Your Body, Mind & Soul In A Spiritual Environment

Truly rejuvenating treatment packages through
Relaxing Traditional Kerala Ayurvedic Therapies



SEVA-DHAM HOSPITAL

K. H.-57, Ring Road, Behind Indian Oil Petrol Pump, Sarai Kale Khan,
New Delhi-110013. Ph. : +91-11-26320000, 26327911 Fax : +91-1126821348
Mobile 9999609878, 9811346904, Website : www.sevadham.info

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
के.एच.-57 जैन आश्रम, रिंग रोड, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,
पो. बो.-3240, नई दिल्ली-110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1
से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया

कवर पेज सहित
36 पृष्ठ

मूल्य 5.00 रुपये
अगस्त, 2012

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका



सत्त्वेणु मैत्री, गुणेषु प्रमोदं, माध्यस्थ भावं विपरीतवृत्तौ।
क्लिष्टेषु जीवेषु कृपापरत्वं, सदा ममात्मा विद्धानुदेव।।

(शास्त्र यूक्ति)

प्राणी मात्र के प्रति मैत्रीभाव गुणशील व्यक्तियों के प्रति प्रमोद भावना नाकि ईर्ष्याभाव। वैर विरोध रखने वालों के प्रति भी माध्यस्थ भाव। और जो कष्टों से पीडित हैं उनके प्रति कृपा परायणता। हे परम आराध्य मेरी आत्मा को ऐसा बना दो।

अनोखी परीक्षा

एक बार स्वामी विवेकानंद का एक शिष्य उनके पास गया और उनसे कहा- 'स्वामी जी, मैं आप की तरह भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति-रिवाज का प्रचार-प्रसार करने के लिए अमेरिका जाना चाहता हूँ। यह मेरी पहली यात्रा है। आप मुझे विदेश जाने की अनुमति और अपना आशीर्वाद दें ताकि मैं अपने मकसद में सफल होऊँ।' स्वामी जी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा फिर कहा, 'सोच कर बताऊंगा।' शिष्य हैरत में पड़ गया। उसने विवेकानंद जी से इस उत्तर की कल्पना भी नहीं की थी। उसने फिर कहा- 'स्वामी जी, मैं आप की तरह सादगी से अपने देश की संस्कृति का प्रचार करूंगा। मेरा ध्यान ओर किसी चीज पर नहीं जाएगा।' विवेकानंद ने फिर कहा- 'सोच कर बताऊंगा।' शिष्य ने समझ लिया कि स्वामी जी, उसे विदेश नहीं भेजना चाहते इसलिए ऐसा कह रहे हैं। वह उनके पास ही रूक गया। दो दिनों के बाद स्वामी जी ने उसे बुलाया और कहा- 'तुम अमेरिका जाना चाहते हो तो जाओ। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।' शिष्य ने सोचा कि स्वामी जी ने इतनी छोटी सी बात के लिए दो दिन सोचने में क्यों लगाए। उसने अपनी यह दुविधा स्वामी जी को बताई। स्वामी जी ने कहा- 'मैं दो दिनों में यह समझना चाहता था कि तुम्हारे अंदर कितनी सहनशक्ति है। कहीं तुम्हारा आत्मविश्वास डगमगा तो नहीं रहा है। लेकिन तुम दो दिनों तक यहां रह कर निर्विकार भाव से मेरे आदेश की प्रतीक्षा करते रहे। न क्रोध किया, न जल्दबाजी की और न ही धैर्य खोया। जिसमें इतनी सहनशक्ति और गुरु के प्रति प्रेम का भाव होगा, वह शिष्य कभी भटकेगा नहीं। मेरे अधूरे काम को वही आगे बढ़ा सकता है। किसी दूसरे देश के नागरिक के मन में अपने देश की संस्कृति को अंदर तक पहुंचाने के लिए ज्ञान के साथ-साथ, धैर्य, विवेक और संयम की आवश्यकता होती है। मैं इसी बात की परीक्षा ले रहा था।' शिष्य स्वामी जी की इस अनोखी परीक्षा से अभिभूत हो गया।

अपने आप को जानो

यूनान के महान दार्शनिक सुकरात ने क्या कहा था? कि अपने आपको जानो। ध्यान मत बांटो। अपना ध्यान इधर-उधर मत होने दो। सबसे पहले अपने आपको जानो। उसके बाद जो करना है करो। अच्छा काम करना है, करो। सबसे बड़ी चीज है अपने आप को जानना। क्योंकि जो घोड़ा अपने आप चल नहीं सकता, उस पर सवारी कौन करेगा? वह कहां जाएगा? वह किसको कहां ले जाएगा? जो कार पहले से ही खराब पड़ी है, वह तो अपने आप गैरिज में भी नहीं जा सकती है। उसको तो धक्का मारना पड़ेगा। मनुष्य की भी यही हालत हो रही है।

एक उदाहरण पढ़िए। एक आदमी है और वह अपनी सारी याददाश्त खो बैठा है। पूरे तरीके से उसको कुछ याद नहीं है। कि वह किसका बाप है, उसका नाम क्या है, वह कहां रहता है? पर उसके जो घरवाले हैं, उनको मालूम है कि ये कौन हैं? वे हर रोज उस आदमी को याद दिलाने की कोशिश करते हैं कि ये तेरा बेटा है। यह तुम को पिताजी कह कर बुलाता था। यह तेरी बीवी है, तू इससे प्यार करता है। ये तेरा भाई है, ये तेरा चाचा है। तू इस मकान में रहता है। ये तेरी नौकरी है, तू इस कंपनी में बड़ा नौकर है।

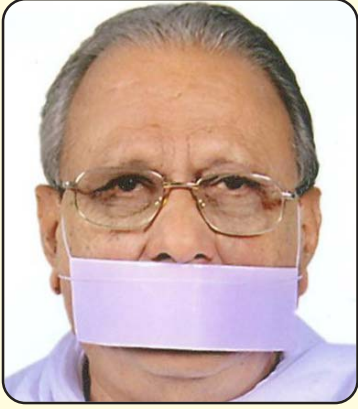
अगर सारी की सारी याददाश्तों की लिस्ट बना ली जाए, तो आप क्या समझते हैं कि सबसे पहले उसको क्या याद आना चाहिए? सबसे पहले उसको याद आना चाहिए कि मैं कौन हूँ? सबसे पहले तो उसको यह याद आना चाहिए कि हां, मेरा नाम हरिराम है। जब उसको यह बात याद आ जाएगी, तब धीरे-धीरे वह और बातों को भी समझ सकता है। परंतु अगर उसको यही नहीं मालूम कि वह कौन है? तो और जो नाते हैं, उन नातों को वह कैसे जोड़ पाएगा?

अगर संसार में यह बात लागू है तो क्या हमारे निजी जीवन में भी यह बात लागू नहीं होगी कि सबसे पहले हमें यह मालूम नहीं होगी कि हम कौन हैं? जब यही नहीं मालूम है कि हम कौन हैं, तो हम औरों से कैसे रिश्ता जोड़ सकेंगे? जो कुछ भी हम को इस संसार के अंदर करना है, वह कैसे कर पाएंगे?

सबसे बड़ी चीज है- अपने आप को जानना। क्योंकि हर एक मनुष्य के अंदर शांति है। हर एक मनुष्य उस भगवान का प्रतीक है। हर एक मनुष्य के मन-मंदिर में उस बनाने वाले ने अपना मकान बनाया है। अगर मनुष्य अपनी जिंदगी में अपने आपको ही नहीं समझ पाया कि मैं कौन हूँ तो वह औरों से रिश्ता कैसे जोड़ सकेगा? जो कुछ भी उसको इस संसार में करना है, उसे कैसे पूरा कर पाएगा? अपने यारों को, अपने मित्रों को समझाने की कोशिश करता है, परंतु अपने आपको समझ नहीं सका। अपने आप को ही नहीं जानता कि मैं कौन हूँ।

-प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

बंधन भीतर है, बाहर नहीं



महात्मा जी उस नगर में पहली बार आए थे। शाम को घूमने के लिए निकल पड़े। नगर के बाहर एक विशाल मंदिर का निर्माण हो रहा था। स्वामीजी ने देखा, सैकड़ों मजदूर मंदिर-निर्माण में लगे हैं।

एक सवाल स्वामीजी के मन में कौंधा। वे एक मजदूर के पास गये और बोले-भाई, क्या कर रहे हो? मजदूर पत्थर तोड़ रहा था। आवाज सुनकर उसने सिर ऊपर उठाया, देखा सामने एक स्वामीजी खड़े हैं। वह खीजता हुआ-सा

बोला-क्या कर रहा हूँ, मुझे पूछ रहे हैं, क्या आपको नहीं दिखता? भगवान ने आपको दो आंखें दी हैं। आप अन्धे तो नहीं। बिल्कुल साफ है कि पत्थर तोड़ रहा हूँ, इसमें पूछने की बात ही क्या है? उसका पत्थर-तोड़ उत्तर सुनकर स्वामीजी मुस्कराते हुए आगे बढ़ गये।

चालीस-पचास कदम पर फिर किसी मजदूर के पास पांच रोके। उससे भी फिर वही सवाल पूछा-भाई, क्या कर रहे हो? वह भी पत्थर तोड़ रहा था। उसने सवाल सुनकर स्वामी जी को माथा नमाया। फिर बुझे हुए स्वर में बोला-महाराज, पत्थर तोड़ रहा हूँ, पेट पाल रहा हूँ। अपनी व्यथा-कथा सुनाते हुए कहने लगा, परिवार में पांच प्राणी हैं। दिन-भर मजदूरी करने पर केवल दस रुपये मिलते हैं। महंगाई का जमाना। एक कमानेवाला तथा पांच खाने वाले। आप ही सोचें, गाड़ी चले तो कैसे चले? पता नहीं, भगवान ने शरीर के साथ यह पेट क्यों बांध दिया, जो कभी भरता ही नहीं। सुबह भरो, शाम को खाली, शाम को भरो, सवेरे खाली। उम्र-भर भरते रहो, पर यह तो खाली-का-खाली। महाराज, बहुत मजबूर हूँ। लगता है यह पेट नहीं है, कुदरत का अभिशाप है। जिसे हम गरीबों को उम्र-भर भोगना है। यह कहते-कहते उसकी आंखें डबडबा आईं।

पहले मजदूर का उत्तर आक्रोश और खीज-भरा था, दूसरे का उत्तर था विवशता और मजबूरी से भरा हुआ। महात्माजी मन्द-मन्द कदमों से फिर आगे बढ़ गये।

थोड़े ही फासले पर एक और मजदूर से फिर वही सवाल पूछा-भाई, क्या कर रहे हो? मजदूर ने स्वामीजी को साष्टांग प्रणाम किया। अत्यंत उल्लास और आनन्द के स्वरो में बोला-महात्मा जी, लगता है मेरी इस ढलती उम्र में पुण्य-प्रभात का उदय हुआ है। मजदूरी तो उम्र-भर की। नेताओं के बंगले बनाये, सेटों की कोठियों बनाई, राजाओं के महल भी खड़े किए। किन्तु इस बार मेरे आनन्द का कोई पार नहीं। मेरे जैसे अदने व्यक्ति के हाथों से भगवान का मंदिर बन रहा है। इससे अधिक पुण्य-घड़ी मेरे लिए और क्या होगी? यह कहते-कहते वह जैसे खुशियों से नाचने लगा। यद्यपि वह मजदूर भी पत्थरों को ही तोड़ रहा था।

स्वामीजी के मन में विचारों का मंथन चलने लगा। बाहर से तीनों मजदूरों की स्थिति एक समान है। तीनों ही पत्थर ही तोड़ रहे हैं। किन्तु भीतर से एक गुस्से और खीज भरा है, दूसरा विवशता और मजबूरी से भरा है, तीसरा खुशियों और आनन्द से भरा है। बाहर से सारे एक ही भूमिका पर खड़े हैं। भीतर में एक-दूसरे से बिल्कुल विपरीत भूमिका पर खड़े हैं। किन्तु सवाल उन मजदूरों का नहीं, हमारा भी है। इस जीवन के रूप में हमें भी एक मंदिर मिला है बनाने के लिए। इस मंदिर को हमें खुद बनाना है। मंदिर के निर्माण के लिए हममें से किसी को पचास वर्ष का समय मिला है, किसी को साठ वर्ष का समय मिला है, किसी को सत्तर और अस्सी वर्ष का। इतने लम्बे समय तक हम मंदिर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। चाहे हम इसे खीजे हुए मन से बनाएं, चाहे बुझे हुए मन से मनाएं चाहे मजबूरी में रोते-रोते बनाएं चाहे आनन्द में नाचते-गाते बनाएं, जिसको भी जीवन मिला है, उसे इस मंदिर को बनाना है। उस मंदिर-निर्माण में बाहर से सबको एक-समान रूप से पत्थरों को ढोना है। बाहर से हम उन मजदूरों की तरह एक ही भूमिका पर खड़े हैं। अब टटोलना है अपने को भीतर से, कि हमारे में से कौन किस भूमिका पर खड़ा है। फर्क भीतर में ही आने वाला है, बाहर से नहीं।

कैसा है जीवन और जगत?

यह अन्तर हमारी अपनी दृष्टि से ही आएगा। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों, मनीषी-चिन्तकों ने इस जीवन और जगत की बड़ी-बड़ी व्याख्याएं दी हैं। किन्तु संक्षेप में जीवन और जगत को यदि समझना चाहें, तो कहा जा सकता है, यह जीवन वैसा ही है, जैसा हम इसे जीते हैं। यह जगत वैसा ही है जैसा हम इसे देखते हैं। या यों समझें कि वह हमारे लिए वैसा ही है औरों के लिए वह वैसा हो, यह जरूरी नहीं है। पत्थर ढोने का एक ही कार्य किसी के लिए रोष और खीज का कारण हो सकता है, किसी के लिए विवशता और

मजबूरी का कारण हो सकता है, किसी के लिए आनन्द और उल्लास का। यह हमारे पर निर्भर है कि हम इसे किस रूप में लेते हैं। अगर हम जीवन और जगत को आनन्दमय देखते हैं, सर्वत्र आनन्द-ही-आनन्द मिलेगा। हम जीवन और जगत को दुःखमय और यातनापूर्ण देखते हैं, हमको सर्वत्र दुःख-ही-दुःख, यातना-ही-यातना मिलेगी। प्रश्न यह नहीं है कि कैसा है जीवन और जगत? प्रश्न यह है कैसी है हमारी ग्रहण-दृष्टि। जैसी है हमारी ग्रहण-दृष्टि, यह सृष्टि भी हमारे लिए वैसी ही है।

जनक के राजदरवार में जब श्री राम शिव-धनुष को प्रत्यंचा पर चढ़ा रहे हैं, दरबार में उपस्थित जन-समूह श्री राम को उस समय अपने-अपने ढंग से देखता है। कोई उन्हें एक धीर-वीर युवा के रूप में देखता है, तो कोई उन्हें शिव-धनुष की ओर बढ़ते देखकर, उनका बचपना मानते हुए हंस रहा है। किन्तु मां सीता के हृदय में उनका ज्योतिर्मय भगवत्-स्वरूप ही अवतरित होता है। इन्हीं विविध दृष्टियों का आकलन करते हुए गोस्वामीजी लिखते हैं-

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

जिस-जिसकी, जैसी-जैसी भावना थी, उन्होंने वैसी-वैसी प्रभु की मूरत को देखा।

भगवान महावीर इसीलिए सबसे अधिक बल सम्यग्-दर्शन पर देते हैं। सम्यग्-दर्शन का सीधा-सा अर्थ है, हमारी दृष्टि सही हो। दृष्टि सही होने से ही ज्ञान सही हो सकेगा। जगत जैसा है, वैसा ही रहेगा। उसमें कोई फर्क नहीं आने वाला है। कैसा है यह जगत, इसका उत्तर जानने से पहले यह ज्ञान लें, कैसी है हमारी दृष्टि? यही स्थिति जीवन की है।

**यह जिन्दगी
वैसे तो
बहुत ही खूबसूरत है,
पर इसको
जरा ठीक से
समझने की जरूरत है,
अगर नहीं समझे
तो है यह शैतान का मंदिर,
समझ गए
तो यही बस
भगवान की मूरत है,**

यह जिन्दगी शैतान का मंदिर भी हो सकती है और भगवान का मंदिर भी। यह हमारे पर है हम इसे किसका मंदिर बनाते हैं।

शैतान भी हमारे भीतर है। भगवान भी हमारे भीतर है। राम भी हमारे भीतर है, रावण भी हमारे भीतर हैं। महावीर भी हमारे भीतर हैं गोशालक भी हमारे भीतर हैं। कृष्ण भी हमारे भीतर हैं, कंस भी हमारे भीतर है। जीसस भी-हमारे भीतर है, जुड़ास भी हमारे भीतर है। जब भीतर का शैतान जागता है, रावण, कंस, गोशालक और जुड़ास जाग जाते हैं। जब भीतर का भगवान जागता है, राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध और जीसस जाग जाते हैं। किसे जगाना है, यह हमारी दृष्टि पर निर्भर है। हमारी दृष्टि शैतान पर है, शैतान जागेगा। हमारी नजर भगवान पर है, भगवान जागेगा।

अपनी दृष्टि को बदलना जरूरी

लगभग हमारी स्थिति यह है, हम अपने को बदलना नहीं चाहते। पड़ोसी को बदलना चाहते हैं, समाज को बदलना चाहते हैं, सरकार को बदलना चाहते हैं, किन्तु खुदको बदलना नहीं चाहते। जबकि यह भी साफ है कि हमारे चाहने से पड़ोसी नहीं बदलने वाला है, न समाज और व्यवस्था बदलने वाली है। चाहे कितना ही कोसते रहें हम पड़ोसी को, समाज को और सरकार को बदलें। उससे कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है। अगर हम सचमुच में चाहते हैं कि औरों में बदलाव आए तो उसका सीधा-सा उपाय है हम स्वयं बदल जाएं-

**औरों को
बदलने के लिए
खुद को बदलना सीखें,
शंकर
बनना हो अगर,
विष-धूंट निगलना सीखें,
उजाले की परिभाषा
न मिलेगी
किताबों में तुम्हें,
उसे पाने के लिए
खुद
दीपक बन जलना सीखें,**

यह एक सुनिश्चित मत है, हम बदलें, सब कुछ अपने आप बदल जाएगा। क्योंकि हमारे बदलते ही हर चीज का संदर्भ बदल जाएगा। संदर्भ बदलते ही अर्थ बदल जाएगा। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के दो शिष्यों में विवाद हो गया। एक कहता-तुमसे बड़ा मैं हूँ। दूसरा कहता, तुमसे बड़ा मैं हूँ। एक संन्यास-दीक्षा में ज्येष्ठ था तथा दूसरा ज्ञान में। विवाद का हल पाने के लिए दोनों स्वामीजी के पास पहुंचे। अपने-अपने तर्क रखे और स्वामीजी से निर्णय देने के लिए निवेदन किया। स्वामीजी ने मुस्कराते हुए कहा-जो दूसरे को बड़ा माने, वह बड़ा। हम थोड़ा-सा ध्यान देंगे, स्वामीजी ने क्या कहा? स्वामीजी ने कहा- जो दूसरे को बड़ा माने, वह है बड़ा। अब तुम हो सोच लो, तुम्हारे में कौन बड़ा है। स्वामीजी का निर्णय दोनों ने सुना। अब दोनों एक दूसरे को बड़ा कहने लगे। जो दीक्षा में, संन्यास में ज्येष्ठ था। वह कहने लगा-माथा मुंडाने से क्या होता है। महत्त्वपूर्ण है ज्ञान। आपने मेरे से शास्त्र ज्यादा पढ़े हैं। आप शास्त्रज्ञ हैं। आप प्रभावशाली प्रवचनकार हैं। आप हैं मेरे से बड़े। दूसरा बोला-शास्त्र पाठ से क्या होता है। एक साधनाहीन व्यक्ति भी बड़े से बड़ा विद्वान हो सकता है, प्रखर वक्ता हो सकता है। पर उससे क्या? महत्त्व साधना का है। आप साधना में मेरे से ज्येष्ठ हैं, इसलिए आप बड़े हैं। इतनी देर दोनों 'मैं बड़ा हूँ' के लिए झगड़ रहे थे, अब दोनों 'आप बड़े हैं' के लिए झगड़ने लगे। किन्तु दोनों झगड़ों में, दोनों विवादों में बड़ा अन्तर है। पहले विवाद में कटुता थी, दूसरे में मधुरता है। पहले में आग्रह था, अहम् था, दूसरे में विनम्रता है, मनुहार है।

यह कटुता मधुरता में कैसे बदली? दोनों वे के वे हैं। फिर 'मैं बड़ा' से 'आप बड़े' कैसे हो गये? दृष्टि बदली, घटनाओं का संदर्भ बदल गया। संदर्भ बदला कि अर्थ बदल गया। अर्थ बदला कि पूरा वातावरण बदल गया। पूरा जीवन बदल गया। जीवन बदला कि पूरा जगत बदल गया।

अपने भीतर है बन्धन और मोक्ष

भगवान महावीर कहते हैं- बन्ध-पमोक्खो तुज्झ अज्झत्येव -हे आत्मन्, बन्धन और मोक्ष तुम्हारे भीतर ही है। बन्धन कहीं बाहर नहीं है। मोक्ष भी कहीं बाहर नहीं है। बन्धन और मोक्ष, दोनों ही तुम्हारे भीतर हैं। हम सांसारिक वस्तुओं को बन्धन मान लेते हैं। कोई धन को बन्धन मानता है, कोई पत्नी को बन्धन मानता है, कोई संतान को बन्धन मानता है, कोई पद, यश, सम्मान को बन्धन मानता है, कोई वस्त्र को बन्धन मानता है, कोई शरीर को बन्धन मानता है। इस तरह हम किसी-न-किसी रूप में संसार को बन्धन माने हुए हैं। किन्तु वास्तव में संसार बन्धन है ही नहीं। यदि संसार ही

बन्धन होता, तो फिर आज तक कोई उससे मुक्त हो ही नहीं पाता। क्योंकि जब तक हम सदेह है, संसार सम्पूर्णतः छूट ही नहीं सकता। वह किसी-न-किसी रूप में जुड़ा हुआ रहेगा ही। परिवार, संतान, वस्त्र, धन, पद ये हम छोड़ भी दें, किन्तु शरीर तो साथ ही रहेगा। शरीर तो नहीं छोड़ा जा सकेगा। और शरीर है तो संसार है ही। फिर संसार को ही बन्धन मान लिया जाये, तो मुक्त होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

और न मोक्ष ही बाहर है। बाहर ही होता मोक्ष, तो धनवान व्यक्ति कभी ही आज तक उसे खरीद लेते। जैसे आज चन्द्रमा की धरती पर प्लाट खरीदे जाने की चर्चा है। कहा जा रहा है कि बहुत जल्दी ही चांद की धरती पर आदमी बसेगा। योजनाएं बन रही हैं। आयोजनाएं हो रही हैं। नक्से बन रहे हैं। सारी व्यवस्थाएं जुटाई जा रही हैं कि आदमी को चन्द्रमा की धरती पर बसाया जाये। सुना है वहां बसने के इच्छुक, धनकुबेर व्यक्तियों के आवेदन भी अमरीकी सरकार के पास आने लगे हैं। अगर चांद की धरती पर नगर बसाना सम्भव होता है, तो केवल धनपति ही वहां पहुंच पायेंगे। गरीब व्यक्तियों का वहां पहुंचना सम्भव ही नहीं है। यह तो चन्द्रलोक की बात है। अगर मोक्ष, बैकुण्ठ-लोक बाहर मिलना शुरू हो जाये, तो कौन धनवान उस बैकुण्ठ-लोक में प्लाट खरीदना नहीं चाहेगा। क्योंकि मोक्ष के बारे में, बैकुण्ठ-लोक के बारे में जो धारणायें-अवधारणायें प्रचलित हैं। उनके अनुसार वहां अनन्त आनन्द सुख है, अनन्त समृद्धि है, अनन्त वैभव है। अपने ससीम धन-वैभव को दांव पर लगाकर उस असीम-अनन्त आनन्द समृद्धि को कौन नहीं पाना चाहेगा? किन्तु भगवान महावीर कहते हैं, वह मोक्ष बाहर नहीं तुम्हारे भीतर है। अनन्त सुख और वैभव का खजाना तुम्हारे भीतर ही है। भगवान कृष्ण कहते हैं- ईश्वरःसर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति -अर्जुन, ईश्वर का निवास-स्थान समस्त प्राणियों का हृदय-प्रदेश है। हृदय-प्रदेश से तात्पर्य उसी आत्म-जगत से है, जिस ओर भगवान महावीर इशारा कर रहे हैं।

बन्धन भीतर है, मोक्ष भी भीतर है। संसार भीतर है, ईश्वर भी भीतर है। इसलिए भीतर पर ध्यान देना है। भीतर में अगर संसार नहीं है, तो बाहर के संसार में ऐसा कुछ नहीं है, जो हमें बांध सके। भीतर में अगर संसार है, तो बाहर के संसार को, धन-परिवार-वस्त्र-पद आदि को छोड़कर भी हम मुक्त नहीं हो सकते। भीतर की पकड़ ही संसार है। हम उसी से बंधे हैं। और भीतर यदि बन्धन है तो बाहर फिर बन्धन-ही-बन्धन है। भीतर में अगर हमने ही अपने को पकड़ रखा है, तो बाहर पकड़ने वाले पग-पग पर मिल जायेंगे।

आपने सुना होगा, लोग बन्दरों को कैसे पकड़ते हैं। जिस जंगल में बन्दर ज्यादा होते हैं वहां मैदान में गड़टे खोदकर उनमें मटके गाड़ दिये जाते हैं। उन मटकों का मुख इतना छोटा होता है कि अंगुलियों और हथेली को सिकोड़कर ही हाथ अन्दर डाला जा सकता है। ऐसे संकरे मुखवाले तथा बड़े पेटवाले घड़ों को जमीन में पूरी तरह गाड़ दिया जाता है। सिर्फ ऊपर का मुंह खुला रहता है। उन घड़ों में थोड़े-थोड़े चने डाल देते हैं। चना बन्दरों का प्रिय भोजन होता है। आसपास किसी व्यक्ति को न देखकर वे उन घड़ों में चनों के लिए हाथ डालते हैं। चनों से मुट्टियां भर लेते हैं। खाली हाथों को तो वे सिकोड़कर घड़े में डाल लेते हैं। किन्तु भरी हुई मुट्टियां उन मुखों में से नहीं निकल पाती। और बन्दर सोच बैठते हैं कि हाथ भीतर से किसी ने पकड़ लिया है। वे अपने हाथों को छुड़ाने की बड़ी कोशिश करते हैं, बड़ी उछल-कूद करते हैं, हाथ-पांव मारते हैं, चीखते-चिल्लाते हैं, किन्तु मुट्टी नहीं छोड़ रहे हैं। पर वे यह समझ बैठते हैं किसी ने हाथ भीतर से पकड़ रखा है, इसलिए बाहर नहीं आ रहा है।

हम सोचें, किसने पकड़ रखा है उनके हाथों को भीतर से? कौन बैठा है भीतर हाथ पकड़ने वाला? पकड़ने वाला दूसरा कोई नहीं होता है। अपनी पकड़ ही पकड़े हुए है भीतर से। और जो अपनी पकड़ की पकड़ में आ जाता है, वह दूसरों की पकड़ में भी आ जाता है। बन्दर अपनी मुट्टी की पकड़ नहीं छोड़ते, इसलिए दूसरों की पकड़ में आसानी से आ जाते हैं। जो अपनी मुट्टी की पकड़ से छूट जाता है वह संसार की पकड़ से भी छूट जाता है। इसलिए भगवान महावीर कहते हैं -बन्धपमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव -बन्धन और मोक्ष तुम्हारे भीतर ही है।

संन्यास क्यों?

प्रश्न हो सकता है जब संसार बन्धन नहीं है, तो संन्यास क्यों लिया जाता है? क्यों संन्यास में स्त्री, सन्तान, परिवार, धन-वैभव तथा वस्त्रों तक को छोड़ा जाता है? यह सही है संन्यास में इन सबको छोड़ा जाता है। और यह भी सही है कि वस्तुतः ये बन्धन नहीं हैं। फिर भी इनको छोड़ा इसलिए जाता है कि ये बन्धन के कारण बन सकते हैं। बन्धन नहीं हैं ये बन्धन के कारण बन सकते हैं। कारण बनते ही हैं। ऐसा भी नहीं है। पर कारण बन सकते हैं, इसलिए इनको छोड़ा जाता है। वस्तुतः बन्धन के कारण अपने राग-द्वेष-मोह ही बन्धन के उपादान हैं। वस्तुएं तो बन्धन का मात्र निमित्त-कारण होती हैं। भीतर में उपादान-कारण न हो, तो बन्धन का कोई प्रश्न ही नहीं है। भीतर में उपादान हो, बाहर में कोई निमित्त न भी हो, तो भी हम बन्धन में आ जाते हैं। सीधे

शब्दों में समझें, बाहर सुन्दर-से-सुन्दर रूप, कानों को प्रिय लगने वाले शब्द, आकर्षक गन्ध, सुस्वादु रस और कोमल गुदगुदे स्पर्श उपलब्ध होने पर भी, भीतर में इन्द्रिय-विषयों के प्रति अगर राग-द्वेष तथा मोह नहीं है, तो कोई बन्धन नहीं है। बाहर ये इन्द्रिय-विषय नहीं भी हैं, किन्तु भीतर इनके लिए एक चाह है, एक लगाव है, एक आकर्षण है, तो बन्धन-ही-बन्धन है, चाह उम्र-भर भी इन्द्रिय-विषयों का सेवन न हो। इन्द्रिय विषय हैं बन्धन के निमित्त-कारण। तथा राग-द्वेष मोहात्मक विचार हैं बन्धन के उपादान-कारण। बन्धन का प्रमुख सम्बन्ध उपादान से है। निमित्त कारणों का परित्याग इसलिये और केवल इसीलिए किया जाता है कि उन निमित्तों से भीतर में उपादान उद्दीप्त न हो। जब राग-द्वेष-मोह निर्बीज हो जाते हैं, फिर बाहरी जल का निमित्त मिल भी जाये, किन्तु उस बीज के उगने की कोई सम्भावना नहीं। बीज है तो जल मिलने से अंकुर फूटना सम्भव है ही। इसी दृष्टि से साधना में इन्द्रिय-विषयों पर संयम का विधान मिलता है।

निमित्त-कारणों से एक हद तक बचा जा सकता है, पर सर्वथा बचना असम्भव है। यह कैसे सम्भव है आंख किसी रूप को देखे ही नहीं, कान किसी शब्द को सुने ही नहीं, नाक किसी गन्ध को सूंघे ही नहीं, जीभ किसी रस को चखे ही नहीं और शरीर किसी का स्पर्श करे ही नहीं। अगर इन्द्रियों द्वारा अपने-अपने विषयों का ग्रहण करना ही बन्धन हो, फिर तो जिनके इन्द्रियां नहीं हैं, वे सबसे पहले मुक्त होने चाहिए। रूप को देखना तथा शब्द को सुनना ही बन्धन हो तो अन्धे और बहरे सबसे पहले मुक्त होने चाहिए। किन्तु बात ऐसी है नहीं। बल्कि इन इन्द्रियों का न मिलना अशुभ कर्म का उदय है तथा मिलना क्षयोपशम भाव है, शुभ का उदय है। इसलिए समझना यह है, न इन्द्रियां बन्धन की कारण हैं, न इन्द्रिय-विषय बन्धन के मूल कारण हैं, और न वस्तुएं बन्धन की उपादान हैं। बन्धन का मूल कारण है आत्मा के राग-द्वेष-मोहात्मक परिणाम। ये रागात्मक, द्वेषात्मक और मोहात्मक विचार भीतर हैं, तो बाहर से हम चाहे कुछ भी कर रहे हों, किन्तु भीतर में कर्म-बन्धन का उपार्जन कर रहे हैं, तो बाहर से चाहे हजार साधन बन्धन के उपस्थित हैं, फिर हमें कोई बन्धन में बांधने वाला नहीं है। अपने को बन्धन में डालने वाले भी हम हैं। अपने को मुक्त करने वाले भी हम हैं। इसीलिए भगवान महावीर ने कहा है- बन्ध-पमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव-आत्मन्, बन्धन और मोक्ष तुम्हारे भीतर ही है।

जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि

बन्धन और मोक्ष, स्वर्ग और नरक, सुख और दुःख सब कुछ हमारे भीतर हैं। इनमें से जिस किसी भूमिका पर हम भीतर में जी रहे हैं, हमें बाहर वही मिल जाएगा। सोचना यही है हम कैसा जीवन जी रहे हैं।



○ संघ परिवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

कृतज्ञ भाव का अर्थ है अपने पर किए गए उपकारों को याद रखना। जो व्यक्ति किए गए उपकारों को भूल जाता है वह कृतघ्न होता है। कृतज्ञ व्यक्ति सहज ही सबका स्नेह-पात्र बन जाता है। कृतघ्न व्यक्ति सबका घृणा-पात्र और निन्दा-पात्र बनता है।

व्यक्ति जब से समाज में जन्म लेता है उस पर समाज के उपकारों का ऋण चढ़ता जाता है।

बाल्यावस्था में वह माता-पिता व घर के सदस्यों से उपकृत होता है। खाना-पीना, चलना, बोलना इत्यादि जीवन-विकास के प्रारम्भिक सूत्र वह अपने निकटवर्ती व्यक्तियों से सीखता है। बालक के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास का पहला श्रेय घर के सदस्यों को ही है।

जीवन में दूसरा मोड़ शिक्षकों के द्वारा आता है। शिक्षक विद्या-गुरु होता है। शिक्षकों का निःस्वार्थ भाव से विद्यादान और छात्रों का सहज भाव से सम्मान-प्रदान परस्पर में आत्मीय भाव के सर्जक हैं। पुराने जमाने में शिक्षकों के प्रति उत्पन्न आदर और समर्पण के भाव रहते थे। इसलिए उस समय के विद्या-गुरु कोरा पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं देते थे, उसका जीवन में व्यावहारिक प्रयोग भी सिखाते थे।

घटना पुरानी है, फिर भी प्रशिक्षण की मनोवैज्ञानिक पद्धति को भली भांति उद्घाटित करने वाली है।

एक राजकुमार बारह वर्ष की पढ़ाई पूरी कर अपने गुरु के साथ घर लौट रहा था। रास्ते में गुरु ने एक क्विण्टल अनाज खरीदा और उस अनाज की पोटली को राजकुमार के सिर पर रख दिया। साथ में कुछ दूसरे विद्यार्थी भी थे।

राजकुमार ने न तो किसी से शिकायत की और न ही बगावत। मौन-भाव से चलता रहा। शरीर से पसीना चूने लगा। सांस फूल गई। फिर भी कुछ नहीं बोला। घर पहुंचने पर पिताजी ने पूछा- 'बेटे! गुरुजी ने तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया?' कुमार बोला-

सोचें तो सही,
हम जीवन कैसा जीते हैं
कहीं ऐसा तो नहीं
कि ऐसा-वैसा जीते है
है यह हंसता फूल भी,
चुभता कांटा भी,
यह वैसा ही है,
हम इसे जैसा जीते है,
एक तो इसे
आप जीते है,
और एक हम जीते हैं,
हम तो
खुशियां जीते हैं
और आप गम जीते हैं,
क्या कारण है
जब मिला है एक-सा जीवन,
हम
इसे ज्यादा जीते हैं
और आप कम जीते हैं,

जीवन को ज्यादा जीने का अर्थ उम्र की लम्बाई से नहीं है, इसका अर्थ इतना ही है, जो क्षण, जो समय जीने का मिला है, उसे किस तरह जीते हैं। रोष और आक्रोश में जीते हैं, विवशता या मजबूरी में जीते हैं या उल्लास और आनन्द में जीते हैं। बाहर से तो जीवन-यापन के लिए किसी-न-किसी प्रकार की मजदूरी करना ही है। पत्थर तोड़ना या भार उठाना ही मजदूरी नहीं है, पेट-पालन के लिये जो भी किया जाये, वह मजदूरी ही है। वह मजदूरी हर किसी देहधारी को करना ही है। उससे छुटकारा सम्भव नहीं है। बाहर से किसी-न-किसी मजदूरी से जुड़ा होकर भी जो भीतर से राग-द्वेष से जुड़ा है, उसके लिए बन्धन ही बन्धन है, दुःख ही दुःख है, संसार ही संसार है। जो आनन्द, समता और वीतरागता से जुड़ा है, उसके लिये मुक्ति ही मुक्ति है, सुख-ही-सुख है, प्रभु ही प्रभु है। हम आनन्द और वीतरागता से जुड़कर भीतर में विराजमान परमात्मा को उपलब्ध हों, यही अपेक्षा है।

‘पिताजी! आज तक तो गुरुजी ने मेरे साथ बहुत मृदु व्यवहार किया लेकिन आज मेरे सिर पर एक विण्टल अनाज की पोटली रखी। यह मुझे बहुत बुरा लगा।’ राजा ने गुरुजी को बुलाकर कहा कि क्या आपको कोई मजदूर नहीं मिला जो इस कोमल बच्चे के सिर पर इतना वजन रखकर लाए? गुरु बोले- ‘राजन्! मैंने बारह वर्षों में कुमार को सारी विद्याएं पढ़ाई। केवल एक विद्या बाकी रह गई थी। उसे मुझे पढ़ाना था इसलिए यह वजन इसके सिर पर रखा।’ राजा बोला- ‘यह कैसे?’ गुरु ने कहा- ‘आज यह कुमार है कल राजा भी बनेगा। अपराधियों को दण्ड भी देगा। आज अगर इसको इस भार से होने वाले कष्ट का अनुभव नहीं होता तो यह हर किसी के साथ चाहे जितना क्रूर व्यवहार कर सकता था। लेकिन अब नहीं करेगा।’ अध्यापक के कठोर व्यवहार के पीछे कितना बड़ा हित था, यह जानकर राजा और कुमार दोनों गद्गद् हो गए और गुरु के चरणों में गिर पड़े। जीवन-निर्माण में गुरु का कितना अचिन्त्य उपकार होता है, यह उनकी समझ में आ गया।

अभिभावक और शिक्षक के बाद मित्रों के उपकारों का क्रम आता है। मित्र वर्ग कोरा मनोरंजन का ही साथी नहीं है। अध्ययन-कला और आर्थिक प्रतिस्पर्धा मित्रों में ही होती है। संकट के समय हार्दिक व शारीरिक सहयोग मित्रों से ही प्राप्त होता है। मन का ग्रन्थि-मोचन व कुंठा-विसर्जन मित्रों के सिवा कहां हो सकता है? इसलिए समवयस्कों का उपकार भी अविस्मरणीय है।

जीवन का चौथा उपकार स्तम्भ है धर्म-गुरु। धर्म-गुरु केवल सभ्यता, संस्कृति का संरक्षण व विकास ही नहीं करते अपितु सच्चाई, ईमानदारी, सहिष्णुता, सत्यपरता, सन्तुलन और समता भाव आदि आत्मीय गुणों को विकसित करने की भी पद्धति बताते हैं, जिनसे आन्तरिक जीवन का निर्माण होता है और सामाजिक जीवन व्यवस्थित बनता है।

कुल मिलाकर मनुष्य का जीवन बहुत-बहुत उपकारों का ऋणी है। जो व्यक्ति इन उपकारों को भूलने की कृतघ्नता करता है, वह उस बिच्छू की कोटि में आता है जिसको पानी में डूबने से किसी परोपकारी सन्त ने अपने हाथ पर उठाकर बचाया और उसने उसी हाथ पर जहरीला कांटा चुभो दिया।

जंगल में घूमने वाले पशु-पक्षियों का जीवन-निर्माण कौन करता है? यह तर्क भूल-भरा है। पशु और मनुष्य का जीवन एक कोटि का नहीं है। पशुओं का जीवन

खाने-पीने, घूमने और सोने में ही कृतार्थ है। वहां मनुष्य-जीवन के साथ बहुत-सी अपेक्षाएं जुड़ी हुई हैं, जिनका प्रशिक्षण मनुष्य को समाज से ही मिलता है। जिन बच्चों को प्रारम्भ से सामाजिक वातावरण नहीं दिया जाता वे विकसित नहीं होते तथा बहरे-गूंगे होते देखे गए हैं। इसलिए समाज के सदस्यों के उपकार अविस्मरणीय हैं। जो समाज के उपकारों को याद रखता है, वह किसी को धोखा नहीं दे सकता। जो किसी को धोखा नहीं दे सकता, वह गलत काम नहीं कर सकता। इसलिए कृतज्ञ भाव को भारतीय परम्परा में महान् आदर्श माना गया है।

कविता

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्रीमती मंजु बाई ने पूज्यश्री गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा भावनाएं व्यक्त की।

कोई दे सका न अब तक	मगर निस्प्राण थे
गुरुदेव आपने वो दिया	भाव भी तो कुछ-कुछ पाषाण थे
बनाकर ये मानव मंदिर	अब तो प्राणों में जगी है चेतना
पूजा को नया आयाम दिया	बुद्धि पर से हटी मलिनता
वरना हम तो पत्थर पूजे जाते थे	भावों में भी उठी झंकार है
अपनी आस्था की बोली लगाते थे	गुरुदेव आपका हमपर ये उपकार है
धिस-धिस कर रोली और चंदन	गुरुदेव तप तो आपने किया
सच्ची पूजा भूल जाते थे	पुण्य हमें दे दिया
पर आपने भरी प्राणों में प्रेरणा	विष तो आपने पिया
और दी भावों को संवेदना	अमृत हमें दे दिया।
बुद्धि को भी दिया श्रेष्ठ चिंतन	हंस बनकर मोती चुगे थे आपने
तभी तो आत्मा में हुआ स्पन्दन	पर माला का उपहार हमें दे दिया
वरना प्राण पहले भी थे	गुरुदेव न जाने आपने कितना कुछ दे दिया

**जय तु जय-2 हे चन्दा प्रभु, करुणा कर करुणेश,
भरो शक्ति कर सकूं मैं, प्रभु अन्दर द्वार प्रवेश।**

भव भ्रमण करते हैं मुझको, वीते युग अगणित प्रभो
ऐसा पथ दिखलाओं हो जा, जन्म मरण अवशेष।

श्रद्धा भक्ति से जो स्मरते, चन्दा प्रभु का नाम जो,
मन वाँछित आशा फले, सब रोग शौक करे शेष।

ग्रन्थी भेदन हो जा मेरी, साधना ऐसी कर सकूं मैं,
अप्रमत्त बन जाए आत्मा, पा कर प्रभु सन्देश।

मन की इच्छाओं के ऊपर, मंजू विजय प्राप्त कर तू
चन्दा प्रभु का ध्यान धर मन, मिटें सब संक्लेश।

तर्ज- जयतु जय-2 हे महेश्वरी



यह भी हो जाए

- अपने विचारों पर ध्यान दें, वे आपके शब्द बन जाते हैं। अपने शब्दों पर ध्यान दें, वे आपकी क्रियाएं बन जाती हैं। अपनी क्रियाओं पर ध्यान दें, वे आपकी आदतें बन जाती हैं। अपनी आदतों पर ध्यान दें, वे आपका चित्र बन जाती हैं।
- जो व्यक्ति कदम दर कदम चल कर चोटी पर पहुंचता है वह उस व्यक्तित्व से कहीं ज्यादा सम्मान पाता है जा चोटी पर हेलीकॉप्टर से पहुंचता है।
- अपने मित्र से तीन वर्ष तक प्रतिदिन एक घंटे तक बातचीत करने की अपेक्षा, किसी वाहन में तीन दिन का साथ आपको एक-दूसरे को जानने में अधिक सहायक होगा।

-प्रस्तुति : गगन जैन

एक बार स्वामी परमहंसानन्द एक गांव के किसी सेट द्वारा दिया गया सवा सौ मन गुड़ बांट रहे थे। जब वे एक लड़की को गुड़ देने लगे तो उस किशोरी बालिका ने इंकार करते हुए कहा- 'मैं नहीं लूगी।'

'क्यों?' स्वामीजी ने पूछा।

'मुझे शिक्षा मिली है कि यों मुफ्त नहीं लेना चाहिए।'

'तो कैसे लेना चाहिए?'

'ईश्वर ने दो हाथ पैर दिये हैं तथा बीच में एक पेट दिया है। आप तो मुफ्त ही दे रहे हैं मुफ्त में तो कुछ भी नहीं लेना चाहिए। जो मजदूरी से, मेहनत से मिले वही लेना चाहिए।'

स्वामी को आश्चर्य हुआ। ऐसी शिक्षा देने वाला कौन है, यह जानने के लिए उन्होंने पूछा- 'तुझे यह सीख किसने दी?'

'मेरी मां ने।'

स्वामीजी उसकी मां के पास गये और पूछा- 'तुमने लड़की को यह सीख कैसे दी?'

'क्यों महाराज', मैंने इसमें नई बात तो कुछ भी नहीं कही। भगवान ने जब हाथ पैर दिये हैं तब मुफ्त में क्यों लेना चाहिए?'

स्वामीजी इन शब्दों से चक्कर में पड़ गये और पूछा- 'क्या तुमने धर्मशास्त्र पढ़े हैं?'

'ना'

'तुम्हारा जीवन निर्वाह कैसे होता है?'

'भगवान सिर पर बैठा है। चिंता उसको है। मैं लकड़ी काट लाती हूं। लड़की लकड़ियां बीन लाती है, उससे अनाज मिल जाता है। लड़की खाना बनाने में भी पूरी मदद करती है। इस प्रकार मेहनत से, मजदूरी से हमारा गुजारा सुख संतोष के साथ चल रहा है।

'तो इस लड़की के पिताजी...'

वह महिला उदास हो गई और कुछ देर रुक कर बोली- 'लड़की के पिता थोड़ी आयु ही लेकर आये थे। वे जवानी में ही हमें अकेले छोड़ कर चले गये। यद्यपि वे लगभग तीस बीघा जमीन और दो बैल छोड़ गये थे लेकिन मैंने विचार किया कि इस संपत्ति से मेरा क्या लेना देना है? मैं कब इसके लिए पसीना बहाने गयी थी? यदि मैं अपंग या बूढ़ी होती तो अपने लिए इस संपत्ति का उपयोग भी करती परन्तु ऐसी तो मैं हूं नहीं। मेरे

मन में आया कि मैं इस संपत्ति का क्या करूँ? तब भगवान ने ही मुझे सुझाया कि 'यदि यह संपत्ति गांव के किसी भलाई के काम में लगा दी जाय तो बहुत अच्छा होगा।'

मैं सोचने लगी ऐसा सा काम हो सकता है और मेरी समझ में आया कि इस गांव में जल का बहुत कष्ट है, इसलिए एक कुआं बनवा दूँ। मैंने संपत्ति बेच दी और उससे मिली रकम एक सज्जन सेट को सौंपकर उनसे कहा कि आप इन पैसों से एक कुआं बनवा दें। सेट भले आदमी थे। उन्होंने मेहनत से तथा कुछ कमी की पूर्ति करके उसी रकम से कुएं के साथ ही पशुओं के जल पीने के लिए एक हैज भी बनवा दिया।

इस प्रकार उस महिला ने अपनी संपत्ति का मोह छोड़कर त्याग किया और लोकहित में उसका उपयोग किया। उस महिला के मन-मस्तिष्क को इतनी शिक्षा अवश्य मिली होगी कि, 'मैं जो पति को ब्याही गई हूँ सो संपत्ति के लिए नहीं अपितु ईश्वर की इच्छा से सत्य को प्राप्ति के मार्ग में आगे बढ़ने के लिए ब्याही गई हूँ। जो काम उनके चले जाने से अधूरा रह गया उसे संपत्ति बेच कर पूरा किया।'

स्वामी परमहंसानंद ने गद्गद् होकर उपस्थित लोगों से कहा- 'यह बहन वास्तव में संत है। वह त्याग, परोपकार, न्याय के संस्कारों से शिक्षित है और यही संस्कार अपनी पुत्री को भी दे रही है।'

उन्होंने कहा- 'यही सच्चा धर्मशास्त्र का ज्ञान है, यही सच्ची पूजा है और ये संस्कार ही सच्ची शिक्षा है।'

यही सही है कि सच्ची शिक्षा, पुस्तकों, प्रमाणपत्रों या परीक्षाएं पास करने में नहीं है अपितु सद्कर्मों में, त्याग में और परिश्रम में ही है।

-प्रस्तुति : साध्वी पदमश्री

किसान के रोबोट

चीन के वू यूलू एक साधारण किसान हैं। खेत में फसल उगाने के साथ ही उन्हें रोबोट बनाने का खयाल आया। उसके बाद तार, स्क्रैब और बहुत सी बेकार पड़ी चीजें, जो उनके काम न आती थीं, उनसे उन्होंने 47 रोबोट बना डाले। मजे की बात यह है कि आज ये रोबोट उसके इशारे पर उसे चाय पिलाते हैं। पेंटिंग करते हैं और उसके कई कामों में मदद भी करते हैं। चीन के लोग ही नहीं, दुनिया भर में लोग वू यूलू की सूझबूझ की तारीफ करते हैं।

-प्रस्तुति : गौरव जैन

सावन का महीना था। आसमान काले बादलों से बोझ से झुका आता-सा लगता था। पुरवाई के शीतल झोंके सिहरन पैदा कर रहे थे। हल्की-हल्की फुहारें कास के फूलों की तरह झर रही थीं। गलियों में पानी चांदी की तरह ढरका हुआ था। पौरव (अब पंजाब) राज्य में आज उत्सव का दिन था। चारों तरफ खुशियों के स्वर गूंज रहे थे। स्त्रियां रंग-बिरंगे वस्त्र पहने, हाथ में आरती की थाल लिए भाईयों के पास दोड़ी जा रही थीं। उनके कंटों से भाइयों की मंगल-कामना के स्वर फूट रहे थे। ऐसे में एक युवती आंधी-पानी से बेपरवाह बदहवास-सी भागी चली जा रही थी। उसने अपना चेहरा लंबे घूंघट में छिपा रखा था। अचानक गली के मोड़ पर वह एक अधेड़ स्त्री से टकरा गई। स्त्री के हाथ में थमा पूजा की थाल गिरते-गिरते बचा।

'अरे! रे, ऐसी भी क्या जल्दी?' महिला की भृकुटियां तन गईं। युवती हड़बड़ा गई और घबराए स्वर में बोली- 'बहन! क्षमा करना जल्दबाजी में मुझे कुछ सूझा नहीं।'

महिला की तनी हुई भृकुटियां सामान्य हो गईं। युवती की दशा देख, मन में सहानुभूति जागी। पूछा- 'क्या बात है बहन! आज खुशियों का दिन है। सबके चेहरे दमक रहे हैं। बहनें भाइयों को राखी बांधने जा रही हैं। लेकिन तुम इस तरह कीचड़ पानी में कहां भागी जा रही हो?' युवती खामोश खड़ी रही।

उत्तर की प्रतीक्षा करके वह अधेड़ महिला पुनः बोली- 'अपने मन की चिंता निःसंकोच हो कर कहो बहन! हो सकता है मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँ।' युवती कुछ क्षणों तक मौन रही फिर थोड़ी घबराहट और संकोच भरे स्वर में बोली- 'क्या मुझे सम्राट पुरु के महल का रास्ता बता सकती हो?'

'बस इतनी सी बात' महिला संतोष भरी मुस्कान बिखेरते हुए बोली- 'इस गली से दाएं मुड़ने पर राजमार्ग मिलेगा। वहां से सीधे चलते जाना, कुछ ही देर में राजमहल तक पहुंच जाओगी।'

युवती को जैसे बड़ा सहारा मिला। वह धन्यवाद कहते हुए तेज कदमों से आगे बढ़ चली।

'निश्चिंत होकर जाओ बहन!' अधेड़ महिला वहीं खड़े-खड़े बोली- 'महाराज बहुत दयालू हैं। तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूरी करेंगे।' युवती तेज चाल से चलती हुई गली के मोड़ पर पहुंचकर ओझल हो गई।

सम्राट पुरु शक्तिशाली राजा थे उनकी वीरता और विपुल सैन्य शक्ति के कारण

शत्रु उनके राज्य शक्ति के कारण शत्रु उनके राज्य की तरफ आंख उठाने का भी साहस नहीं करते थे। प्रजा खुशहाल थी। सम्राट स्वयं प्रजा का हाल-चाल जानने समय-समय पर उनके बीच जाते थे। राज्य में हर ओर सुख-शान्ति और खुशी का माहौल था। रोज की भांति सम्राट पुरु आज भी दरबार में आकर बैठे ही थे कि सैनिक एक युवती को पकड़ लाए।

‘महाराज की जय हो’ सैनिकों ने बताया- ‘यह स्त्री महल में घुसने की चेष्टा कर रही थी।’

‘देवी इस प्रकार बिना आज्ञा के राजमहल में प्रवेश का क्या प्रयोजन है?’ सम्राट ने युवता से पूछा।

युवती घुंघट में चेहरा छिपाए चुपचाप सिमटी हुई खड़ी रही। ‘आज रक्षाबंधन का पावन पर्व है। बहनें भाइयों की कलाई पर राखी बांधकर प्रफुल्लित हो रही हैं। पर तुम इतनी उदास क्यों हो?’

‘महाराज!...’ युवती अटकते हुए बोली- ‘मेरा कोई भाई नहीं’ ‘ऐसा न कहो बहन!’ सम्राट सिंहासन से उतरकर निकट आते हुए बोले- ‘मैं हूँ तुम्हारा भाई। मुझे बोधो राखी’

युवती ने आंचल का एक टुकड़ा फाड़कर सम्राट की कलाई में बांध दिया। सम्राट की आंखें पल-भर के लिए सजल हो उठीं। वे भरे कंठ से बोले- ‘मांगो बहन क्या मांगती हो? आज तुम्हारा भाई हर मनोकामना पूरी करेगा।’

‘भैया! विचार करके कहिए। मेरी मनोकामना पूरी करना शायद आप के लिए कठिन हो।’ वह युवती बोली।

सम्राट की आंखें आत्माभिमान से दीप्त हो उठीं। ‘वह भाई भी क्या जो बहन की इच्छा न पूरी कर सके। अपनी मनोकामना कहो। संसार आज एक भाई का हृदय भी देख ले।’

इतना सुनते ही युवती ने घुंघट हटा दिया और बोली- ‘महाराज पहचाना मुझे? मैं विश्वविजेता सम्राट सिकंदर की पत्नी और आज से आपकी बहन हूँ। कहिए, क्या अब भी आप बहन की मनोकामना पूरी करने का साहस रखते हैं?’

सम्राट का मुख-मंडल दृढ़ निश्चय से दीप्त हो उठा। वे उसी आवेश में बोले- ‘बहन! तुम अगर हिन्दुस्तानी होती तो संभवतः यह प्रश्न न करती। भाई अपने वचन से पीछे कभी नहीं हटता। चाहे प्राण ही क्यों न चलें जाएं।’

‘यही विश्वास लेकर आई हूँ भैया’ कहते-कहते वह युवती घुटनों के बल झुक गई। उसका अभिमान स्वर दयनीय हो उठा ‘मैं आज यहां एक विश्वविजेता की महारानी बनकर नहीं बल्कि अपनी सुहाग-रक्षा के लिए स्त्री बनकर सामने खड़ी हूँ।’

दरबारी अवाकू बैठे थे। सारे दरबार में सन्नाटा छाया हुआ था। युवती बोलती जा रही थी- ‘मेरे पति की भुजाओं में शक्ति है। जिधर तलवार घूमती है उधर सैकड़ों नरमुंड गेंहू की कटी बालियों की तरह उछल जाते हैं। किंतु जब से उन्होंने भारत की पवित्र भूमि की ओर अपनी दृष्टि डाली है मेरा हृदय न जाने क्यों अज्ञात आशंका से कांप रहा है।’

‘पर यह सब तुम मुझे क्यों बता रही हो बहन?’

‘भैया, मैं आपसे एक वचन चाहती हूँ।’ युवती बोली- ‘आज अपनी बहन! से वादा कीजिए कि युद्ध-भूमि में कैसी भी परिस्थिति आए आपकी तलवार बहन का सुहाग नहीं उजाड़ेगी।’

सम्राट कुछ देर गंभीर मुद्रा में बैठे रहे फिर दृढ़ निश्चय भरे स्वर में बोले- ‘जाओ बहन! निश्चिंत रहो। मेरे प्राण रहें या जाएं किंतु अब यह तलवार सिकंदर की गर्दन पर नहीं गिरेगी। यह एक भाई का वचन है।’ युवती की आंखें झरने लगीं। सम्राट पुरु को हृदय से दुआएं देती हुई वह वापस लौट गई।

कुछ दिनों बाद परिस्थितियां ऐसी निर्मित हुई कि झेलम नदी के तट पर पुरु और सिकंदर आमने-सामने आ खड़े हुए। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध आरंभ हो गया। युद्ध के दौरान एक क्षण ऐसा आया जब सिकंदर अपने घोड़े से फिसलकर जमीन पर आ गया। पुरु के पास निर्णायक अवसर था कि अपने भाले से सिकंदर की छाती वेध दे। किंतु उसने अपना वचन याद रखा। उसने हार को गले लगा लिया पर भाई-बहन के रिश्ते को आंच न आने दी। सिकंदर भले ही जीत गया, पर अपना हृदय हार गया। पुरु की वीरता से प्रभावित होकर उसने जीता हुआ राज्य उसे वापस सौंप दिया और विश्वविजय का अभियान वहीं रोककर वापस लौट गया।

-प्रस्तुति : साध्वी वसुमती

प्रथम हृदय है फिर बुद्धि। प्रथम सिद्धांत है फिर प्रमाण। प्रथम स्फुरणा और फिर उसके अनुकूल तर्क। प्रथम कर्म और फिर बुद्धि। इसीलिए बुद्धि कर्मानुसारिणी कही गयी है। मनुष्य जो भी करता है, या करना चाहता है, उसका समर्थन करने के लिए प्रमाण भी ढूंढ निकालता है।

-महात्मा गांधी

वह अनोखा कॉलेज

यह घटना उस समय की है, जब स्वतंत्रता आंदोलन में तेजी आ रही थी। सरकारी शिक्षा-संस्थाओं का बहिष्कार इसका एक हिस्सा था। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों के लिए अच्छी शिक्षा-दीक्षा का उचित प्रबंध भी आवश्यक हो गया था। लेकिन बंगाल के आंदोलनकारियों के पास न तो इतना धन था और न ही सुविधाएं, जिससे कि विद्यालय चलाया जा सके। निर्णय हुआ कि आपसी सहयोग से ही ऐसा कॉलेज खोला जाए।

किसी तरह चंदा जमा किया गया। आम लोगों से जितना कुछ बन सका, सब ने सहयोग किया। फिर भी चंदे से जो राशि मिली वह काफी नहीं थी। आखिरकार जैसे-तैसे एक कॉलेज खोला गया। लेकिन इसके लिए संचालक की आवश्यकता थी। उसकी नियुक्ति के लिए विज्ञापन दे दिए गए। संचालक का वेतन कुल पचहत्तर रुपये मासिक तय किया गया। एक संचालक के लिए उस समय यह वेतन काफी कम था किंतु प्रबंध समिति संचालक को इससे अधिक वेतन देने की स्थिति में नहीं थी। खुद प्रबंध समिति के सदस्यों ने इस बात को स्वीकार किया कि शायद इस वेतन पर कोई भी काम करना स्वीकार न करे। विज्ञापन के जवाब में बहुत दिनों तक कहीं से भी कोई आवेदन नहीं आया तो प्रबंध समिति निराश हो गई। मगर एक दिन अचानक ऐसे व्यक्ति का आवेदन पत्र आया, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। बड़ौदा कॉलेज के अध्यक्ष अरविन्द घोष ने, जिन्हें उस समय अनेक सुविधाओं के साथ सात-सात सौ रुपये मासिक वेतन मिलता था, मात्र पचहत्तर रुपये मासिक वेतन पर राष्ट्रीय महाविद्यालय का संचालक बनना स्वीकार कर लिया था। यह खबर सुनकर तत्कालीन सभी शिक्षाशास्त्रियों ने स्वीकार किया कि 'जिस शैक्षणिक संस्था के संचालकों का चरित्र महान और जीवन त्यागपूर्ण होगा, निश्चय ही वहां के विद्यार्थी भी महान होंगे।' और ऐसा ही हुआ। बाद में इस कॉलेज से अनेक चोटी के देशभक्त राजनेता निकले जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और दूसरों को भी प्रेरित किया।

-प्रस्तुति : सौरभ मुनि

किसी की दूरी का लाभ उठाने की कोशिश मत करो,
इस कथा अधूरी का लाभ उठाने की कोशिश मत करो,
ज़िन्दगी के सब दिन समान नहीं होते, इसलिए दोस्त !
किसी की मजबूरी का लाभ उठाने की कोशिश मत करो।

आपकी रसोई में मौजूद दर्द निवारक

अदरक से बनाएं मांसपेशियों के दर्द को एक याद

जब डेनमार्क के शोधकर्ताओं ने मांसपेशियों के दर्द से पीड़ित लोगों को अपनी डाइट में अदरक शामिल करने को कहा तो दो महीनों के भीतर ही उनमें से 63 प्रतिशत को मांसपेशियों तथा जोड़ों के दर्द, सूजन तथा मांसपेशियों की कठोरता से मुक्ति मिली। विशेषज्ञों ने इस बात का श्रेय अदरक के शक्तिशाली कम्पाऊंड जिंजेरोल्स को दिया जो दर्द बढ़ाने वाले हार्मोन्स के निर्माण को रोकते हैं। अध्ययन में सुझाई गई खुराक : प्रतिदिन के खाने में एक चम्मच सूखा अदरक 2 चम्मच कटा हुआ अदरक अवश्य शामिल करें।

दाँत दर्द को भगाए लौंग

आपके दाँत में दर्द है और आप डेंटिस्ट के पास नहीं जा सकते? एक लौंग धीरे-धीरे चबाने से दाँत दर्द तथा मसूढ़ों की सूजन दो घंटे के लिए दूर होती है, ऐसा यू.सी.एल. ए. शोधकर्ताओं का मानना है। विशेषज्ञों के अनुसार लौंग में यूजीनोल नामक एक प्राकृतिक कम्पाऊंड मौजूद होता है जो एक शक्तिशाली एनैस्थेटिक है। प्रतिदिन अपने भोजन में एक-चौथाई चम्मच लौंग पाऊडर छिड़कने से दिल की रक्षा भी होती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह सामान्य क्रिया ब्लड शूगर को नियंत्रण में रखती है। इसका तीन हफ्ते लगातार सेवन धमनियों में थके पैदा करने वाले कोलैस्ट्रॉल के निर्माण को धीमा करता है।

सीने की जलन दूर करे साइडर विनेगर

प्रत्येक भोजन से पहले 1 बड़ा चम्मच एप्पल साइडर विनेगर को 8 औंस पानी में मिलाकर पीने से 24 घंटों के भीतर सीने की जलन के पीड़ादायक दौर खत्म हो जाते हैं। सेंटर फॉर कोलोन एंड डाइजैस्टिव डिजीजेज, हंटसविले में गैस्ट्रोएंटरो-लॉजिस्ट जोसेफ ब्रास्को कहते हैं, 'साइडर विनेगर मैलिक तथा टारटैरिक एसिड्स से भरपूर होता है जो पाचन में बहुत सहायक होते हैं। भोजन नली में पहुंच कर सीने की जलन पैदा होने से पहले ये फैट्स तथा प्रोटीन्स को तोड़ने की गति बढ़ाते हैं ताकि आपका पेट तेजी से साफ हो सके।'

लहसुन भगाए कान का दर्द

कान का दर्द तेजी से दूर करने के लिए गर्म-लहसुन के तेल की दो बूंदें पांच दिनों के लिए दिन में दो बार डालने से कान का दर्द दूर होता है। न्यू मैक्सिको यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ मैडिसिन के विशेषज्ञों का कहना है कि इस साधारण उपचार से कान का संक्रमण दवाओं के मुकाबले तेजी से दूर होता है।

हल्दी से दर्द से राहत

अध्ययनों से पता चला है कि लोकप्रिय भारतीय मसाला हल्दी एस्पिरिन, इबूप्रोफेन तथा नैपरॉक्सन के मुकाबले दर्द से राहत देने में तीन गुना अधिक प्रभावी है। साथ ही यह गटिया और फाइब्रोमाइअलिया से जूझ रहे 50 प्रतिशत लोगों को गहरे दर्द से छुटकारा दिलाने में सहायक होती है। ऐसा करकुमिन नामक एक सक्रिय सामग्री के कारण होता है जो साइक्लूऑक्सीजीनेज 2 एन्जाइम को बंद करती है जो दर्द पैदा करने वाले हार्मोन्स के प्रवाह को मथता है। ऐसा कहना है 'रिवर्सिंग डायबिटीज' के लेखक तथा न्यूट्रीशन रिसर्चर जूलियन व्हाइटेकर का। इस अध्ययन द्वारा सुझाई गई खुराक : प्रतिदिन एक-चौथाई चम्मच हल्दी का सेवन खाने में अवश्य करें।

अंगूरों से पीठ दर्द का उपचार

क्या आपकी पीठ में अक्सर दर्द रहता है? इससे तेजी से छुटकारा पाने के लिए अंगूर सबसे बढ़िया रहते हैं। ओहायो यूनिवर्सिटी के हालिया अध्ययनों से यह बात सामने आई है कि रोजाना एक कप अंगूरों का सेवन करने से कठोर रक्त वाहिनियां रिलैक्स होती हैं जिससे पीठ के क्षतिग्रस्त ऊतकों (टिश्यूज) तक रक्त प्रवाह में सुधार होता है। यह एक शानदार खबर है क्योंकि आपकी रीढ़ और झटका सहने वाली डिस्क अपनी नजदीकी रक्त वाहिनियों पर ही निर्भर होती हैं। ये रक्त वाहिनियां ही इन तक पोषक तत्व तथा ऑक्सीजन पहुंचाती हैं।

मुंह के छालों को शहद से ठीक करें

यू.ए.ई. के दुबई स्पेशलाइज्ड मैडीकल सेंटर के शोधकर्ताओं के अनुसार अब पाश्चराइज्ड रहित शहद को दिन में चार बार मुंह के छालों पर लगाने से वे किसी भी क्रीम की तुलना में 43 प्रतिशत तेजी से भरते हैं। शुद्ध शहद में मौजूद प्राकृतिक एन्जाइम्स सूजन कम करके वायरस को नष्ट कर देते हैं जिससे छाले तेजी से ठीक हो जाते हैं।

माइग्रेन के इलाज में सहायक कॉफी

यदि आप भी माइग्रेन से ग्रस्त हैं तो अपनी दर्दनिवारक दवा को कॉफी के साथ लेने की आदत डालें। नैशनल हेडेक फाऊंडेशन के शोधकर्ताओं का कहना है कि आप कैसी भी दर्दनिवारक दवा का सेवन करते हों, इसके साथ कॉफी पीने से इसका असर 40 प्रतिशत या उससे भी अधिक बढ़ जाता है। विशेषज्ञों के अनुसार कैफीन पेट में दर्दनिवारक को जल्द पचाने तथा उसका असर देर तक बनाए रखने में सहायता करती है।

मासिक राशि भविष्यफल-अगस्त 2012

○ डॉ. एन.पी. मित्तल, पलवल

मेष-मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर शुभफल दायक है। सरकारी कर्मचारियों के लिये भी सन्तुष्टि दायक समय है। इस राशि के जातकों के लिए किसी नव निर्वाण का प्रसंग आ सकता है। कुछ का रूका हुआ काम बनेगा। कार्यों में रूकावटें आएंगी किन्तु अन्ततः सफलता मिलेगी। मित्र मददगार होंगे। कुछ यात्राएं भी लाभप्रद हो सकती हैं। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

वृष-वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अर्न्तविरोध के चलते सफलता देने वाला है कुछ खर्चा भी विशेष होगा। नये लोगों से मुलाकातें काम आयेंगी। राजनीति के क्षेत्र में इस राशि के जातक अपनी जगह बना पायेंगे। मित्रों से लाभ-होगा। किसी दूसरे के झंझट में न पड़े, अन्यथा नुकसान हो सकता है।

मिथुन-मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक आय तथा कम व्यय वाला है। कुछ जातकों का पिछला चला आ रहा ऋण भी चुकता हो जायेगा या रूका हुआ पैसा मिल जाएगा। विद्यार्थियों को भी अपने परिश्रम का सुफल मिलेगा। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। मेहमानों की आवा जाही लगी रहेगी।

कर्क-कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभलाभ की स्थिति लिये रहेगा। घर परिवार में चल रहे विरोध को शान्त करने में काफी ऊर्जा का व्यय होगा। कुछ जातकों को नव निर्माण होने से खुशी मिलेगी तथा कुछ को लंबित पड़ी यात्राएं पूरी होने की खुशी होगी। इस राशि के जातक अन्य के झगड़ों से दूर रहें।

सिंह-सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुछ अवरोधों के चलते परिश्रम साध्यलाभ देने वाला है। कुछ जातकों को अत्याधिक आर्थिक लाभ होगा किन्तु उन्हें पैसे का सही इस्तेमाल हो, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा। कुछ नौकरी पेशा जातकों को पदोन्नति होने की खुशी हो सकती है।

कन्या-कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिला कर शुभ फल दायक ही कहा जाएगा। व्यवसाय संबंधी कुछ यात्राएं भी होंगी जिनका सुफल मिलेगा। परिवार में छोटी मोटी कहासुनी होगी जो सुलझ जाएगी। मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा। आप नए कपड़े खरीद सकते हैं। आप नई योजनाओं को अंजमा को देंगे। कुछ जातकों को भूमि भवन का लाभ ही संभव है।

तुला-तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से इस माह का आदि तथा अन्त लाभकारी है तथा मध्य उतना लाभकारी नहीं है। वैसे आय और व्यय में संतुलन बना रहेगा। कुछ जातकों को लंबित पेड़ भूमि भवन के फैसलों का भी समय है जो इनके पक्ष में होगा। मित्रों और परिवार जनों में आपकी साख बनी रहेगी। सामाजिक कार्यों में जनता का सहयोग मिलेगा। कोई महत्वपूर्ण सूचना भी आपको इस माह खुशी दे सकती है।

वृश्चिक-वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह काग चेष्टा रखने का है। लाभ के अवसर को हाथ से जाने न दें। ऐसा लगेगा कि आर्थिक लाभ होगा किंतु यदि समय का सदुपयोग न किया तो हाथ में आता आता पैसा रूक जाएगा। कुछ सूचनाएं इस प्रकार भी मिलेगी। कि मानसिक चिंता बनेगी। कुछ जातकों के मुद्दकमें आदि के फैसले के फलस्वरूप उन्हें लाभ हो सकता है।

धनु-धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रम एवं संघर्ष के चलते अन्य लाभ देने वाला है। किसी के साथ हंसी-मजाक करते हुए अपनी सीमा को न लांघें। भौतिक वस्तुओं की खरीद की होड़ के चक्कर में न पड़े। इन जातकों के भूमि भवन संबंधी समस्या का कोई हल निकल आएगा। अपने बुजुर्गों का सम्मान करें **मकर**-मकर राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। हां राजनीतिक लोगों को अधिक फायदा होगा। उनका वर्चस्व बढ़ेगा। शत्रु परास्त होंगे। घर परिवार में शांति व सामन्जस्य बना रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ कटुता आएगी किन्तु कोई हल निकल आएगा। ये जातक किसी भी वार्ता में अपशब्द बोलने से बचे।

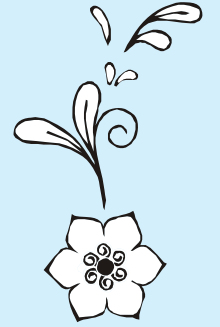
कुम्भ-कुम्भ राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह सामान्य लाभ देने वाला है। इस माह के आरम्य तथा अन्त में शुभ फल मिलेंगे तथा मध्य में मिश्रित फल मिलेंगे। सरकारी कर्मचारियों को उनके अधिकारियों की मदद मिलेगी। मुकदमें आदि में सफलता मिलेगी। जब अशुभ फल मिलेगा तो खर्चा अधिक होगा।

मीन-मीन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफल दायक नहीं है। शरीर में अस्वस्थता के कारण कार्य में पूरा ध्यान नहीं दे पायेंगे, ऐसा लगता है। पीलिया, मलेरिया, आदि रोग घेर सकते हैं, कुछ लोग पेट की वजह से परेशान रहेंगे। ये जातक मुकदमे आदि में विजय प्राप्त कर सकते हैं। नौकरी पेशा जातकों का अपने अधिकारियों के प्रति रवैया अपतित्जनक हो सकता है।

-इति शुभम्

परम पूज्य श्रद्धेय आचार्यश्री रूपचन्द्र जी महाराज साहब 11 जुलाई को मानव मंदिर से अमेरिका के लिए रवाना हुए। पूज्य गुरुदेव के रवाना होते ही सब साधु-साध्वियाँ एवं गुरुकुल के बच्चे उदास और मायूस हो गए। उस समय आचार्यश्री की वह गजल सबको खूब याद आई-

डॉलर है सुख सुविधाएं हैं लेकिन वो मस्ती नहीं है
सभी जगह मिल जाए मस्ती, इतनी तो सस्ती नहीं है।
माना हमने नाव पस्सी है, राजनीति के भंवर-जाल में
किंतु डूब जाए दरिया में ऐसी वो किस्ती नहीं है।
कहां राम, महावीर कहां हैं, बुद्ध कहां नानक गांधी
इनके सम्मुख खड़ी हो सके पश्चिम में हस्ती नहीं है।
सांझे रिश्ते, सांझे मेले, सांझी खुशियां, सांझे आंसू
कहीं देखलें इस धरती पर भारत सी बस्ती नहीं है।



इस बार आचार्य श्री का स्वास्थ्य ठीक नहीं था, फिर भी गुरुदेव भक्तों के वार-2 आग्रह को टाल नहीं सके। मानव मंदिर मिशन के प्रबन्धक भाई अरुण तिवारी भी गुरुदेव जी के साथ हैं संयोग की बात है वरना अमेरिका का बीजा बनना आसान नहीं था।

उधर अमेरिका समाज का आग्रह भरा निवेदन इसलिए था कि सिद्धाचलम् तीर्थ में श्री सम्मद शिखर जी तीर्थ का शिलान्यास पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में ही हुआ था। इसलिए पूरा समाज यही चाहता था कि प्रतिष्ठा महोत्सव भी आपश्री के सान्निध्य में हों। अतः अमेरिका समाज का अत्यधिक आग्रह होने से गुरुदेवश्री ने स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी अमेरिका पधारने का प्रोग्राम बनाया। प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्यश्री के सान्निध्य में बड़े धूम-धाम से उल्लासमय वातावरण में सनानन्द सम्पन्न हुआ।

इधर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में गुरु पूर्णिमा के दो-दो प्रोग्राम एक हिसार सेन्टर में और एक दिल्ली आश्रम में बड़े ही भव्य रूप से मनाए गए दिल्ली गुरु पूर्णिमा के उत्सव पर लोगों का हुजुम देखने लायक था। हिसार में गुरु दरबार के उत्सव पर सभी साधु-सतियों को जोश आया हुआ था हिसार समाज ने बड़े उत्साह से प्रोग्राम को सफल बनाया। इस कार्यक्रम में हिसार के पदाधिकारी विशेष रूप से प्रसन्न थे। सौरभ मुनि ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया गायक भारती जी ने उनका साथ दिया। साध्वी समुदाय ने भजन द्वारा गुरुदेवश्री का वर्धावन किया। संघ प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी ने पुज्य गुरुदेव के जीवन पर प्रकाश डालते हुए दीर्घ जीवन की मामना की। श्रीमती मंजूबाई जैन

ने अपनी भव्य भीनी कविता गुरुदेव को समर्पित की। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी समताश्री जी ने सफलता पूर्वक किया।

‘हंस अकेला’ की लेखिका डॉ. विनीता गुप्ता ने भी गुरुदेव जी के प्रति अपने विचार रखे।

पूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी का स्वास्थ्य सुधार पर है। इलाज चालू है। आपके सान्निध्य में सभी साधु-साधवियां सानन्द कुशल है। हिसार व सुनाम वासियों का बहुत आग्रह था कि साध्वीश्री चांद कुमारी जी का चातुर्मास हिसार या सुनाम में हों लेकिन उनके स्वास्थ्य को देखते हुए साध्वीश्री चांद कुमारी जी का चातुर्मास दिल्ली में ही है।

मानव मंदिर गुरुकुल एवं सेवाधाम की गतिविधियां बराबर प्रगति पर है। पूज्या संघ प्रवर्तिनी साध्वीश्री के सान्निध्य में आश्रम की सारी गतिविधियों को बल मिल रहा है।

चुटकुले



1. राघव- यार संजय मैं चीजों को भूलने लगा हूँ। मेरी अकल मोटी हो गई है, समझ नहीं आता कि मैं क्या करूँ?

संजय- अरे, इसमें सोचने वाली क्या बात है, तू डाइटिंग कर...।’

2. अध्यापक- तुमन होमवर्क क्यों नहीं किया?

छात्र- क्योंकि मैं होस्टल में रहता हूँ।

3. ऋतिक क्लास में हंस रहा था तभी विपिन ने उसे क्लास में हंसने के लिए मना लिया।

ऋतिक- तुम हंसने के लिए रोक क्यों रहे हो?

विपिन- क्यों मैं मॉनिटर हूँ।

ऋतिक तुम मॉनिटर हो, तो मैं सी.पी.यू. हूँ।

4. एक नया मच्छर पहली बार उड़ान पर निकला। वापस आने पर उसकी मां ने पूछा- बेटा तुम्हारी उड़ान कैसी रही?

मच्छर- हां मां, अच्छी रही, सभी लोग मुझे उड़ते देखकर तालियां बजा रहे थे।

5. पवन- डाक्टर साहब, आपने कहा था कि सुबह खेलने से सेहत ठीक रहती है। पर मुझे तो कोई फर्क पड़ा नहीं।

डाक्टर- कौन सा गेम खेलते हो?

पवन- जी, मोबाइल पर स्नेक वाला।

6. टी.टी. मुन्नू से- ‘टिकट दिखाओ। मुन्नू ने टिकट दिखा दिया।

टी.टी.- यह तो पुराना है।

मुन्नू- तो गाड़ी कौन सी नई है?

-प्रस्तुति : नमन जैन



-मंत्र पाठ करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री साथ में हैं सौरभ मुनि एवं भारती जी।



-पूज्य गुरुदेव के चरणों में अपनी कविता पाठ करते हुए समाजसेवी श्रीमती मंजू बाई जैन।



-परम पूज्य गुरुदेवश्री का प्रवचन श्रवण करते हुए भक्तजन।



-पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री जी गुरुपूर्णिमा उत्सव पर गुरुदेव को श्रद्धा सुमन भेंट करते हुए।



-पूज्य गुरुदेवश्री के प्रवचन सुनने में तल्लीन भक्त समुदाय का एक दृश्य।



-गुरु पूर्णिमा पर्व पर पूज्य गुरुदेवश्री जी का आशीर्वाद लेते हुए भक्तजनों की एक झलक।